मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों की प्रासंगिकताः आलोचनात्मक विश्लेषण प्राचीन तथा बदलते शैक्षिक परिवेश के विशेष संदर्भ में

प्राप्तिः 20.02.26
स्वीकृतः 10.03.26

20

कु. रोशन परवीन
शोधार्थिनी, (शिक्षाशास्त्र विभाग)
कु. मायावती महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर (गौ.बु. नगर)
ईमेलः roshanparveen2586@gmail.com

डॉ. अमर ज्योति
असिस्टेंट प्रोफेसर, (शिक्षाशास्त्र विभाग)
कु. मायावती महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर (गौ.बु. नगर)

सारांश

भारत एक ऐसा देश है जहां मूल्यों को सर्वाधिक प्राथमिकता दी जाती है। मूल्य समाज द्वारा निर्धारित कुछ महत्वपूर्ण नियम होते हैं, जो व्यक्ति को निर्देशित तथा नियंत्रित करते है। मूल्य के माध्यम द्वारा ही व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र तीनों को निर्देशित तथा नियंत्रित किया जाता है। मूल्य हमारी संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत देश विविधताओं का देश है। यहां विभिन्न प्रकार की बोलियां बोली जाती हैं। यहां अनेक धर्म, कई प्रकार की संस्कृति के लोग एक साथ मिलजुलकर रहते हैं। प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने मूल्य से अत्यधिक लगाव होता है। मूल्य मुख्य रूप से धर्म से जुड़े होते हैं जिनके प्रति व्यक्ति का अटूट लगाव होता है। व्यक्ति सहयोग, सहानुभूति, स्नेह, न्याय, दया इत्यादि भावों को सीखता है। मूल्य के माध्यम द्वारा ही व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का सम्मान करना सीखता है। समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए मूल्यपरक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। कहने को शिक्षा एक छोटा सा शब्द है, परंतु इसमें तमाम सृष्टि का विकास समाया हुआ है। शिक्षा के माध्यम द्वारा ही प्राचीनकाल से मनुष्य निरंतर विकास करता हुआ चला आ रहा है। यह एक ऐसा साधन है जो पशुरूपी मनुष्य को समाज में रहने लायक एक सभ्य मानव बनाने में समर्थ है। यदि मूल्यपरक शिक्षा को सही तरीके से उपयोग किया जाए तो एक स्वस्थ समाज के साथ–साथ एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करने में भी सहायक होती है। शिक्षा हमें एक बेहतर इंसान बनाती है तथा हमें समाज में रहने लायक बनाती है। मूल्यपरक शिक्षा एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करती है जो समाज में अपना योगदान दे सके। मूल्यपरक शिक्षा हमें हमारी संस्कृति को समझने में भी सहयोग प्रदान करती है। इस प्रकार की नैतिक शिक्षा के महत्व को हम कभी भी नकार नहीं सकते हैं। प्राचीन काल से ही तमाम शिक्षाविदों ने मूल्यपरक शिक्षा के महत्व को भली–भांति समझा है। तमाम ग्रंथ,

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.20

लेख, साहित्य पुस्तकें इत्यादि इस बात का संदेश देती है कि मूल्यपरक शिक्षा के बिना एक मनुष्य का जीवन अधूरा है। तमाम शिक्षाविदों ने समय तथा स्थिति के अनुसार अपने–अपने मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। शिक्षाविदों के शैक्षिक सिद्धांतों की प्रासंगिकता को समझ कर उनके विचारों का उपयोग करके राष्ट्र व समाज ने समयानुसार स्वयं में कई प्रकार के सुधार तथा परिवर्तन किये और विकास की राह में प्रगति प्राप्त की। आज के समय में जिस प्रकार शिक्षा मूल्यों तथा नैतिकता से परे होती जा रही है, जहां मनुष्य मनुष्य न रहकर एक स्वार्थी जीव के रूप में उभर रहा है। समाज में भाईचारे की जगह ईर्ष्या भाव ने लेना प्रारंभ कर दिया है। धर्म के नाम पर बेवजह के लड़ाई झगड़ों ने राष्ट्र को खोखला करना प्रारंभ कर दिया है। इसलिए यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों का विश्लेषण करके उसके महत्व को समझ कर उन सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। इस रिसर्च पेपर में हम शिक्षाविदों के मूल्य परक शैक्षिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालेंगे तथा यह समझने का प्रयास करेंगे कि उनके मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांत आज की बदलती परिस्थितियों के लिए कितने महत्वपूर्ण और उपयोगी हो सकते हैं।

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है जिसके माध्यम द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रकार के ज्ञान अर्जित करता है। अपनी आवश्यकतानुसार अपने भीतर कौशलों का विकास करता है। शिक्षा के माध्यम द्वारा स्वयं का विकास करके व्यक्ति समाज में रहने योग्य बनता है तथा समाज में अपना योगदान सुनिश्चित करता है। शिक्षा एक प्रकार से व्यक्ति को स्वयं से उसका परिचय कराती है। यह एक प्रकार से मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। मनुष्य में तमाम नैतिक गुणों के साथ–साथ उसके मानसिक व शारीरिक पक्ष को भी मजबूत बनाती है। व्यक्ति में चिंतन तथा मनन उत्पन्न करती है। एकाग्रता का गुण पैदा करती है तथा व्यक्ति के सोचने व समझने की क्षमता में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। मूल्य आधारित शिक्षा एक प्रकार से व्यक्ति को निर्देशित तथा नियंत्रित रहना सिखाती है। वह समाज में स्वयं को एक सम्मानजनक व जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में देखना प्रारंभ कर देता है। मूल्यपरक शिक्षा जीवन को संतुलन के साथ व्यतीत करना सिखाती है। मूल्य आधारित शिक्षा मनुष्य में सर्वंगीण विकास करती है, जिससे तमाम ऐसे व्यक्ति मिलकर एक सभ्य समाज का निर्माण करते हैं और समाज तथा राष्ट्र की प्रगति संभव होती है। भारतीय समाज में प्राचीन काल की शिक्षा एक प्रकार से अध्यात्म पर आधारित थी, जहां मोक्ष को प्राप्त करना परम उद्देश्य माना जाता था। इसी प्रकार प्राचीन शिक्षा में व्यक्ति के भीतर नैतिक मूल्यों के समावेश पर अत्यधिक बल दिया जाता था। उस काल में ऐसा माना जाता था कि जीवन मरण के चक्र से मुक्त होकर हमारी आत्मा को परमात्मा में विलीन होने के लिए हमें अच्छे कर्म करने होंगे जिससे हमें मोक्ष की प्राप्ति मिल सके, अर्थात शिक्षा के माध्यम द्वारा व्यक्ति को अपने भीतर छुपे हुए तमाम अवगुणों को पहचान कर उन्हें दूर करना तथा अपनी प्रतिभाओं तथा अच्छे गुणों को पहचान कर उनको विकसित करना था। अतः प्राचीन शिक्षा पूरी तरह से धार्मिक तथा आध्यात्मिक थी। धीरे–धीरे समय के साथ शिक्षा में परिवर्तन देखने को मिले। देश तथा समाज में शिक्षा के स्वरूप के बदलने के साथ

ही जहां कई प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले वहीं अनेक प्रकार की समस्या और चुनौतियों ने भी समाज तथा राष्ट्र के सामने कई प्रकार के प्रश्न खड़े कर दिए। जैसे; क्या हम आज भी शिक्षा के माध्यम द्वारा एक बेहतर राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे या नहीं? राष्ट्र में जो नैतिकता का हास हो रहा है उसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या हम पहले की तरह एक सौहार्दपूर्ण देश का निर्माण कर पाएंगे या नहीं? अतः अब यह आवश्यक है कि हम उन तमाम शिक्षाविदों के मूल्यपरक शैक्षिक विचारों का गहन रूप से विश्लेषणात्मक अध्ययन करें और उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता को समझ कर उनका सही दिशा में उपयोग करें जिससे एक बेहतर भविष्य तथा बेहतर राष्ट्र का निर्माण हो सके।

मूल्यपरक शिक्षा का अर्थ तथा महत्व

मूल्यपरक शिक्षा को समझने से पहले हमें मूल्य के अर्थ को समझना अति आवश्यक है। बिना मूल्य को समझे हम मूल्यपरक शिक्षा के बारे में सही प्रकार से समझने में असमर्थ होंगे। मूल्य एक प्रकार से किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के मूल्यांकन को प्रदर्शित करता है। यह हमें बताता है कि क्या चीज हमारे महत्व की है और क्या हमारे लिए महत्वहीन है। मूल्य हमें अच्छे और बुरे का अनुभव कराता है। मूल्य के माध्यम द्वारा ही मनुष्य में नैतिक गुणों का विकास होता है। इस प्रकार मूल्य एक प्रकार से हमारे आचार और व्यवहार को निर्देशित और नियंत्रित करते हैं। मूल्य हमें समाज में एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में स्थापित करने में हमारी सहायता करते हैं। मनुष्य जिस समाज में रहता है उस समाज के मूल्य का ज्ञान होना उस व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है। मूल्य का ज्ञान होने से व्यक्ति अपने समाज के साथ आसानी से संतुलन बना लेता है। मूल्य के माध्यम द्वारा ही वह अपने समाज की संस्कृति को भी अच्छे से समझ लेता है। सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो हम पाएंगे मूल्य के भी कई रूप होते हैं, जैसे नैतिक मूल्य जो हमारे अंदर अच्छे गुणों का विकास करते हैं। नैतिक मूल्यों के माध्यम द्वारा ही व्यक्ति अपने अंदर अच्छे गुणों का विकास करने में समर्थ होता है। आध्यात्मिक मूल्य व्यक्ति के धर्म से जुड़े हुए होते हैं। सामाजिक मूल्यों के माध्यम द्वारा व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास होता है। जिससे व्यक्ति समाज में रहने लायक तथा समाज में अपना योगदान देने लायक बनता है। कुछ मूल्य व्यक्तिगत होते हैं जो मनुष्य में आत्मविश्वास, आत्म नियंत्रण इत्यादि गुणों का विकास करते हैं। सांस्कृतिक मूल्य हमें अपनी संस्कृति के साथ–साथ दूसरों की संस्कृति का भी आदर करना सिखाते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा हम अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और रीति रिवाजों को सीखते हैं। इस प्रकार देखा जाए तो मूल्य के कई भिन्न–भिन्न रूप होते हैं। इन तमाम मूल्यों को किसी बालक के भीतर समाहित करने का सबसे बेहतर माध्यम मूल्यपरक शिक्षा होती है, जो बालक में नैतिक गुणों के साथ–साथ इन तमाम गुणों के माध्यम द्वारा बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायता प्रदान करती है। मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों के माध्यम द्वारा व्यक्ति अपने मूल्यों के प्रति जागरूक होता है। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियां को समझता है। मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम द्वारा व्यक्ति में आत्मविश्वास तथा आत्म नियंत्रण की भावना का विकास होता है। बालक के भीतर मूल्यों के विकास में उसके परिवार तथा माता–पिता की अहम भूमिका होती है। इसलिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि बालक के सामने एक आदर्श व्यक्तित्व प्रस्तुत किया जाए, जिससे बालक उन मूल्यों को पहचान कर उनका अनुकरण करके अपने अंदर आत्मसात कर सके।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.20

बदलते परिवेश में मूल्यपरख शैक्षिक सिद्धांतों की आवश्यकता

प्राचीन काल से ही तमाम शिक्षाविदों ने नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया है। जहां पर बालकों को यह सिखाया जाता था कि वह अपने से बड़ों का आदर करें, अपने भीतर दया, भाव, सम्मान इत्यादि गुणों को समाहित करें। प्रेम तथा सौहार्दपूर्ण के साथ मिलजुल कर एक दूसरे के साथ रहे। परंतु बदलते परिवेश के साथ शिक्षा में विभिन्न प्रकार के बदलाव देखने को मिले। प्राचीन शिक्षा प्रणाली जहां अध्यात्म पर आधारित थी वहीं नई शिक्षा प्रणाली पूर्ण रूप से व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली पर आधारित हो गई। आज के समय में मनुष्य शिक्षा का अर्जन केवल जीविकोपार्जन करने के लिए ग्रहण करता है। स्कूली शिक्षा पर यदि एक नजर डाली जाए तो देखा जाता है कि पुराने समय में जहां स्कूली पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित किया जाता था। नैतिक शिक्षा जैसे पाठ्यक्रम के माध्यम द्वारा स्कूलों में बालकों के भीतर अनेक नैतिक गुणों का विकास किया जाता था। परंतु धीरे–धीरे बदलती परिस्थिति ने स्कूलों से नैतिक शिक्षा जैसे पाठ्यक्रम को बिल्कुल उपेक्षित कर दिया। व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अत्यधिक वृहद हो जाने से नैतिक शिक्षा पूर्ण रूप से उपेक्षित हो गई, जिसके परिणाम आज हमारे सामने है। नैतिक शिक्षा जैसे पाठ्यक्रम की कमी से बालकों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा। बालक नैतिक मूल्यों से अछूते रहे। उनमें दया, प्रेम, सम्मान, आदरभाव इत्यादि नैतिक मूल्यों की कमी देखने को मिली। व्यवसायिकता की दौड़ में बालक नैतिकता को भूलता चला गया। परिणाम यह हुआ कि बालक अनुशासनहीन होता चला गया। बालक में नैतिक गुणों की कमी के कारण बालक स्वयं अच्छाई और बुराई का निर्णय लेने में असमर्थ हो गया। आज का बालक नैतिक मूल्यों की कमी के कारण मानसिक तथा भावनात्मक रूप से अत्यंत कमजोर होता जा रहा है जिसके कारण काफी भयावह परिणाम सामने देखने को मिल रहे हैं। गौर किया जाए तो यदि बालक के भीतर ही नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा तो वह किस प्रकार एक सभ्य समाज का निर्माण कर पाएगा। यदि सभ्य समाज का निर्माण नहीं होगा तो एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण कैसे हो पाएगा। नैतिक मूल्यों की कमी के कारण आज हमारे समाज में विभिन्न प्रकार की कुरीतियों और बुराइयों ने पैर पसारना प्रारंभ कर दिया है। आधुनिकता की दौड़ ने नैतिकता को भुला दिया है। बालक अपनी सांस्कृतिक परंपराओं तथा रीति रिवाज को भूलता जा रहा है और पाश्चात्य सभ्यता को अपनाता जा रहा है। इसका नकारात्मक प्रभाव हमारे राष्ट्र पर पड़ रहा है। धीरे–धीरे हमारा राष्ट्र पतन की ओर अग्रसर होता जा रहा है। यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा तो इसके हमें विपरीत और भयानक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। अतः आवश्यक है कि हम मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों के महत्व को समझें और तमाम शिक्षाविदों के दिए गए मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों का विश्लेषणात्मक अवलोकन करके उनके तमाम विचारों की उपयोगिता को समझें और आज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार उसे अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करें। जब तक हम स्वयं उन तमाम शिक्षाविदों के विचारों को अपने अंदर आत्मसात नहीं करेंगे हम अपने आने वाली भावी पीढ़ियों को नैतिक मूल्य से अवगत नहीं करा पाएंगे। अतः एक बेहतर भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि हम सर्वप्रथम स्वयं में आदर्श गुणों का विकास करें, नैतिक मूल्यों को समझें, अपनी संस्कृति तथा रीति रिवाज को पूर्ण रूप से आत्मसात करें, आधुनिकता के पीछे न भाग कर

हम अपनी संस्कृति के साथ जुड़ने का प्रयास करें तभी हम अपने आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर भविष्य दे पाएंगे। ऐसा नहीं है कि बदलती परिस्थितियों के अनुसार केवल व्यावसायिक शिक्षा पर ही बल दिया जाए। अगर हम प्रयास करें तो व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ हम एक मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम द्वारा न केवल बच्चों में अच्छे और नैतिक गुणों का विकास कर पाएंगे बल्कि उसे इस लायक बना पाएंगे कि वह अपना राष्ट्र तथा समाज में अपने योगदान दे सके तथा एक जिम्मेदार नागरिक बन सके।

शिक्षाविदों द्वारा दिए गए मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांत

प्रारंभ से ही अनेक दार्शनिकों तथा शिक्षाविदों ने मूल्यपरक शिक्षा के महत्व को समझा तथा अपने–अपने विचारों को समय तथा स्थिति के अनुसार प्रस्तुत किया जिससे एक स्वस्थ तथा सभ्य समाज का निर्माण हो सके तथा भारत जैसा बहुलतावाद देश इस नैतिक शिक्षा के माध्यम द्वारा विविधता में एकता उत्पन्न कर सके तथा एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण हो सके।

डॉ0 जाकिर हुसैन ने अपनी पुस्तक भारतीय शिक्षा और मानव मूल्य (1965) में मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों के द्वारा छात्रों के केवल मानसिक तथा शारीरिक विकास पर ही बल नही दिया बल्कि उन्होंने छात्र के चारित्रिक निर्माण पर भी विशेष बल दिया है। उनका मानना था कि बालक में चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्य तथा सामाजिकता का भी विकास महत्वपूर्ण है। बालक की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह अपनी संस्कृति, रीति–रिवाज और परंपराओं को समझ सके तथा अपने जीवन में आत्मसात कर सके। जाकिर हुसैन का मानना था कि केवल पुस्तकीय ज्ञान ही बालक के लिए पूर्ण नहीं है बल्कि उसे नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों से भी अवगत कराया जाए, जिससे वह समाज में रहकर एक बेहतर नागरिक की भूमिका का निर्वाहन कर सके। जाकिर हुसैन बुनियादी शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि बालक में बुनियादी शिक्षा के माध्यम द्वारा उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करना चाहिए। श्रम के महत्व को समझाना चाहिए। आज की बदलती परिस्थितियों को देखते हुए जाकिर हुसैन का मानना था कि हमारी शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा का भी समावेश होना चाहिए परंतु तकनीकी शिक्षा के आगे इस बात का ध्यान रखना चाहिए की कहीं हमारे नैतिक मूल्य उपेक्षित न हो जाए। तकनीकी शिक्षा आज हमारे समय की जरूरत बन गई है परंतु बिना नैतिक गुणों के कोई भी व्यक्ति संपूर्ण नहीं माना जा सकता। अतः इस बात का प्रयास करना चाहिए कि हमारे पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ नैतिक तथा मूल्यपरक शिक्षा को भी स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे बालक अपनी संस्कृति तथा मूल्यों को समझ सके तथा उसका सम्मान कर सके।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को व्यक्ति के लिए अनिवार्य बताया और कहा कि हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित होना चाहिए। गांधी जी का मानना था कि बिना शिक्षा के कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं हो सकता। गांधी जी ने अपनी पुस्तक सत्य के साथ मेरे प्रयोग (1927) में मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम द्वारा व्यक्ति में सहयोग, प्रेम और सत्य जैसे गुणों का विकास करना चाहते थे। गांधी जी की मूल्यपरक शिक्षा बच्चों को आदर्श नागरिक बनने पर बल देती है। एक आदर्श नागरिक ऐसा नागरिक होता है जो स्वयं अपना भार उठा सकता है, स्वयं अपनी उन्नति करता है तथा अपने साथ–साथ अपने

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i01.20

आसपास के लोगों की उन्नति में भी अपना योगदान देता है। बुनियादी शिक्षा में गांधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि बालक को इस प्रकार शिक्षित किया जाए कि वह अपना उत्तरदायित्व अच्छी तरह से निभाने में सक्षम हो जाए तो एक बेहतर राष्ट्र निर्माण का आधे से अधिक कार्य स्वयं पूर्ण हो जाएगा। इस कारण पाठशाला में नैतिक शिक्षा युक्त पाठ्यक्रम होना अति आवश्यक है। सामाजिक जीवन तथा परिवार में यह प्रयास करना चाहिए कि एक बेहतर तथा आदर्श व्यक्तित्व बालक के समक्ष प्रस्तुत किया जाए जिससे बालक उन आदर्शों का अनुकरण करके स्वयं को एक बेहतर नागरिक बना सके। बदलते परिवेश के साथ–साथ गांधी जी ने तकनीकी शिक्षा की उपेक्षा नहीं की। उनका मानना था कि नैतिक शिक्षा के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा भी आज के समय की मांग है।

स्वामी विवेकानंद के भी शैक्षिक विचार मुख्य रूप से मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों पर आधारित है। उनकी पुस्तक कर्म योग (1896) तथा आध्यात्मिक शिक्षा (1895) दोनों ही पुस्तक मूल रूप से नैतिक मूल्यों पर आधारित विचारों को दर्शाती है। उनके अनुसार मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, आचरण तथा संस्कारों में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि ऐसी शिक्षा को हम शिक्षा नहीं मान सकते जो एक व्यक्ति का बेहतर चरित्र निर्माण न कर सकती हो। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में उच्च गुणों का विकास कर सके। व्यक्ति के भीतर समाज सेवा की भावना विकसित कर सके। उनका मानना था कि यदि व्यक्ति शिक्षित नहीं है तो वह अपने निर्णय लेने में असमर्थ होगा जिससे उसका विनाश निश्चित है। अतः प्रयास करना चाहिए कि व्यक्ति को मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम द्वारा उसका सर्वांगीण विकास किया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी मूल्यपरक शिक्षा के माध्यम द्वारा व्यक्ति में मानवतावादी गुणों का विकास करना चाहते थे। उनका मानना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्तियों को समाज सेवा की ओर अग्रसर करना सिखाए, विश्व बंधुत्व की भावना को बढ़ावा दे, जीवन संघर्ष मे सफल बनाएं और व्यक्ति का स्वयं से परिचय कराये, जिससे व्यक्ति अपने स्वयं के अच्छे और बुरे का निर्णय लेने में समर्थ हो सके।

निष्कर्ष

यदि हम किसी समाज को देखें या किसी राष्ट्र या देश को देखें तो हम पाएंगे कि यदि वह राष्ट्र या समाज एकजुट है तो वह शक्तिशाली है परंतु यदि वह राष्ट्र या समाज एकजुट नहीं है तो उसका विनाश निश्चित है। हमारा भारत देश विविधताओं का स्थान है। यहां विभिन्न प्रकार की संस्कृतियां एक साथ मिलजुल कर रहती हैं। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के वंश, वर्ण, जातियां, धर्म, भाषा, रीति–रिवाज, वस्त्र, आभूषण तथा अन्य विभिन्नताएं एक साथ रहती हैं। इतनी विविधताओं के बाद भी भारतीय संस्कृति में एकता के दर्शन होते हैं, इसका प्रमुख कारण है कि हमारी भारतीय संस्कृति में एकता का आधार कोई राजनीतिक या भौगोलिक कारण नहीं बल्कि यहां की संस्कृति रहा है, जिसने तमाम विविधताओं को एकता में बांधकर रखा हुआ है। परंतु निरंतर बदलती हुई परिस्थितियों ने एक प्रकार से हमारी संस्कृति तथा मूल्यों पर वार किया है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में आज का हमारा छात्र अपनी संस्कृति तथा रीति–रिवाजों को भूलता जा रहा है। जिसका सबसे प्रमुख कारण है शैक्षिक संस्थानों में मूल्यपरक शिक्षा पाठ्यक्रम की पूर्ण रूप से उपेक्षा। माना बदलते

समय के साथ व्यावसायिक शिक्षा किसी बालक के लिए अत्यधिक आवश्यक है परंतु बिना नैतिक मूल्यों के एक बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तमाम शिक्षाविदों के मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों का अध्ययन करने के उपरांत यही देखने में आया कि यदि हम अपने शैक्षिक संस्थानों, अपने परिवार तथा समाज से मूल्यपरक शैक्षिक सिद्धांतों की अनदेखी करेगे तो हम धीरे–धीरे अपनी संस्कृति को खोते चले जाएंगे तथा हमारा समाज और राष्ट्र पतन की ओर तेजी से अग्रसर होता जाएगा। अतः आवश्यक है कि हम समय रहते सचेत हो जाएं और तमाम शिक्षाविदों के दिए गए शैक्षिक सिद्धांतों की उपयोगिता को समझते हुए उनके मूल्यवान विचारों को अपने जीवन में आत्मसात करें तथा एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दें।

संदर्भ

1. हुसैन, जाकिर (1943) राष्ट्रीय मूलभूत शिक्षा। दिल्लीः जामिया मिल्लिया इस्लामिया प्रकाशन।
2. हुसैन, जाकिर (1957) मूलभूत शिक्षा के सिद्धांत। नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद।
3. स्वामी विवेकानंद (1896) कर्म योग। रामकृष्ण मठ धंतोलीः नागपुर प्रकाशन।
4. गांधी महात्मा (1927) सत्य के साथ मेरे प्रयोग। नेशनल बुक ट्रस्ट; इंडिया प्रकाशन।
5. स्वामी विवेकानंद (1895) आध्यात्मिक शिक्षा। रामकृष्ण मठ धंतोलीः नागपुर प्रकाशन।
6. हुसैन, जाकिर (1962) मूलभूत शिक्षा और संस्कृति। पटनाः बिहार विश्वविद्यालय प्रकाशन।
7. हुसैन, जाकिर (1965) भारतीय शिक्षा और मानव मूल्य। नई दिल्लीः प्रकाशन केंद्र।